हिन्दी साहित्य के नये आयाम

पूनम सिंह

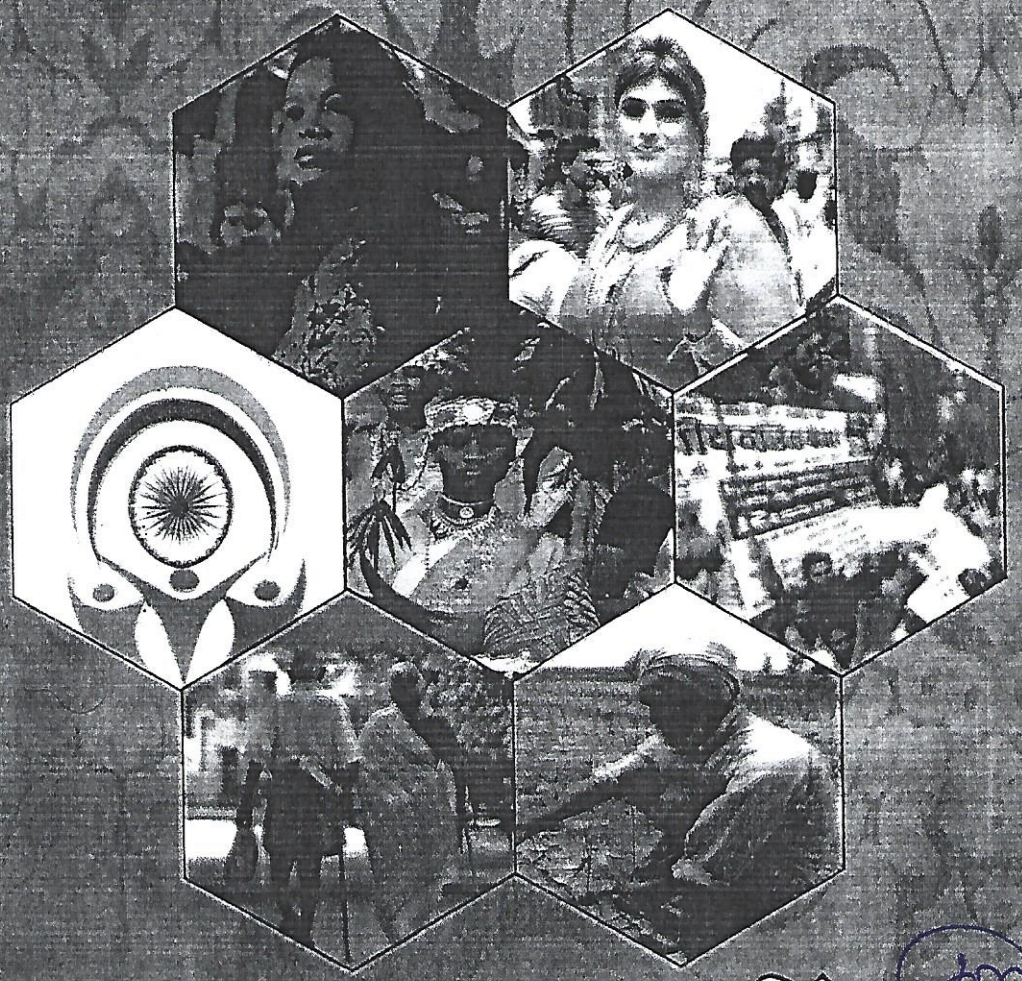

Principal

अनुक्रम

1	किसान विमर्श *डॉ. शशिभूषण सिंह*	13 – 16
2	डॉ. श्यामसुंदर दुबे की रचना दृष्टि में किसान *बबिता तिवारी*	17 – 22
3	किसान जीवन का दस्तावेज : गोदान *पूनम सिंह*	23 – 29
4	किन्नर समाज का बदलता परिदृश्य : पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा *संगीता*	30 – 35
5	समाज परित्याग नर'ई' किन्नर सहित वार्ता के संदर्भ में *डॉ. आरिफ जमादार*	36 – 41
6	केरल में किन्नरों की स्थिति एक झाँकी *सनोज पी. आर.*	42 – 46
7	अधूरी जिंदगी की पूरी दास्तान : ज़िंदगी 50-50 *डॉ. अनुपम गुप्ता*	47 – 51
8	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श *क्षेत्र सिंह*	52 – 58
9	महुए के फूल : आदिवासियों की दारुण कथा *डॉ. मीना जाधव*	59 – 63

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

तिरस्कार आरम्भ हो जाता है। पिता उसे घृणा करता है। मोहल्ले–पडोस और स्कूल में भी उसके प्रति दुर्व्यवहार होता है। उसकी बढती उम्र के साथ पिता की क्रूरता बढती ही जाती है। साथी सहपाठी तो जिज्ञासावश उससे बलात्कार करते हैं। डॉ. रश्मि दीक्षित द्वारा रचित कहानी 'नियति' मे भी किन्नर के रूप में जन्मे शिशु के किन्नर समूह में सम्मिलित करने की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन है।

सफिया सिद्दीकी की कहानी 'अपना दर्द' एक आदर्शवादी पृष्ठभूमि पर लिखी गई हिजडो के जीवन पर आधारित है उनके अनुसार स्त्रैण स्वभाव अलिगियो की नैसर्गिक प्रवृति होती है। राजू इसी प्रवृत्ति के कारण परिवार से वहिष्कृत होकर हिजडो के समूह मे शरण पाता है। 'मृत्यु के बाद माँ के नाम एक किन्नर का खत' की कथावस्तु मे भी कहानी को बडी ही संवेदनशीलता के साथ किन्नर जीवन की व्यथा का चित्रण किया है। तपन बदोपाध्याय की कहानी बृहनल्ला' और होने के लिए प्यार और हमदर्दी के साथ उसके मातृत्व की महत्ता को केद्र मे रखकर किन्नरो की मातृत्व के प्रति आकाक्षा में छिपी वेदना को बड़ी ही संवेदनशीलता के धरातल पर अभिव्यक्त किया है।

परमजीत ढींगरा की कहानी 'खामोश महाभारत' मे भी इसी प्रकार का एंक प्रसंग प्रतीकात्मक प्रयुक्ति के द्वारा किन्नर की सामाजिक स्थिति के साथ मानसिक पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। एक महाभारत तो कुरुक्षेत्र के मैदान में लडा गया परन्तु न पुरुष न स्त्री होने के कारण चौरासी हजार योनियों से बाहर किन्नरो के भीतर होने वाले महाभारत की अभिव्यक्ति कहानी को विशिष्ट बनाती है। 'किन्नर' कहानी भी महत्वपूर्ण इसलिए है कि कथाकार सामान्य पुरुष होते हुए भी किन्नर के वंश में रहता है। किन्नर का वेश धारण करके किन्नरो के पारंपरिक पेशे से जुड़कर न केवल अपनी रोजी–रोटी चलाते है बल्कि उनकी आड़ मे लोगों से दुर्व्यवहार करते हैं। कभी–कभी जुर्म की दुनिया मे उतरने के लिए भी वह किन्नर रूप का सहारा लेते हैं। नीलू एक ऐसा ही किन्नर है जो कि मर्द है।

संदर्भ सूची

1. हम भी इंसान हैं– डॉ. एम फिरोज खान
2. थर्ड जेडर · हिंदी कहानियॉं, डॉ. एम फिरोज खान
3. किन्नर विमर्श समाज के परित्यक्त वर्ग की व्यथा, डॉ. पुनीत बिसरिया

क्षेत्र सिंह
शोधछात्र
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
बडोदरा, गुजरात
अल्लापुर, प्रयागराज–211006
उत्तर प्रदेश

9

महुए के फूल : आदिवासियों की दारुण कथा

झुग्गियों को शूल बनकर
कौन चुभ रहा है ?
जनजातीय कलियों को
पैरो तले कौन रौंद रहा है ?
यह हवा क्यों
फूट–फूट कर रो रही है ?
ये राहे .....
क्यों सूनी और उदास है ?

आदिवासी अर्थात जो आदिमकाल से भारतभूमि के मूल निवासी है, जो धरती पुत्र है, जिनकी संस्कृति प्रकृति की गोद में विकसित हुई और उस प्रकृति की मर्यादा में रहकर ही जिनकी परंपराएँ विकसित हुई है। आदिवासी जो वनफूल है, जीवन को जीने का उल्लास जिनमें झरने की तरह झलकता है लेकिन ये नगर की सभ्य जातियों से अलग है और इसीलिए शोषण के शिकार है। केवल भारत मे ही नही तो विश्व का इतिहास यह दर्शाता है कि आदिवासियों का शोषण नगरीय सभ्यजन हमेशा करते रहे है। संभवतः इसीलिए ये आदिम जातिया घने जगलों में, गिरि–कदराओं में सिमट गयी है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक जातियॉं है। उनमे से कुछ जातियाँ सवर्ण कहलाती है तो कुछ दलित तो कुछ जनजातियॉं। भारतीय संविधान के अनुसार आदिवासी जनजाति कहलाते है। राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद 342 के अधीन अनुसूचित जनजातियों के तौर पर निर्दिष्ट किया है। यह एक प्रशासनिक शब्द है जिससे किसी विशेष क्षेत्रीयता का संकेत मिलता है। उसके उद्देश्य किसी जनसमुदाय की विशिष्ट आनुवाशिक स्थिति से ज्यादा उसके सामाजिक, आर्थिक स्थिति का परिचय देना है। आदिवासी जो वास्तव में मूल निवासी है आज अपनी ही जमीन से बेदखल कर दिय गये है क्योकि उनके पास इस बात का कोई सबूत

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

गयी है। उनके पास जमीन का लिखित पट्टा नही है। जगल जिनका जीवन है उन्हे पर्यावरण सरक्षण के नाम पर जगल से ही बाहर फेंका जा रहा है। वनों पर उनका प्राकृतिक रूप से अधिकार है, उनकी जीवन शैली पर्यावरण पूरक है। लेकिन पहले अंग्रेजो की साम्राज्यवादी प्रवृति ने जगलों का दोहन किया और आज पर्यावरण के नाम पर आदिवासियों को जगल से बेदखल कर दिया गया है।

तुलसीदास एक समन्वयवादी विचार के रचनाकार थे। अत उन्होने अपने रामचरितमानस में इन आदिवासियो का उल्लेख सम्मान से किया है। भील, किरात आदि जातियों तब भी वन में सम्मान से रहती थी। उनके क्षेत्र मे अन्य लोगों का दखल नही था। लेकिन धीरे–धीरे शहरीकरण, भूमडलीकरण, उपभोगतावाद ने छोटे कस्बो और आदिवारी ग्रामो की स्थिती बडी तेजी से बदली है। जंगलों का कटना, वन सपदा और खनिज सपदा का दोहन, आधुनिकीकरण ये सारी शहरी आवश्यकताएँ है लेकिन उसका सर्वाधिक नुकसान भोगा है वह आदिवासी समाज ने। उनका प्राकृतिक निवास, उपजीविका के साधन, उनकी जीवन शैली, परंपराए सभी पर बहुत बुरा असर पडा है। उनका नैतिक बल क्षीण हुआ है।

तेलुगु के प्रसिद्ध रचनाकार बोया जगय्या की कहानी 'महुए के फूल' इन हाशिये से परे की जनजातियों की व्यथा को व्यक्त करती है। इस तेलुगु कहानी का हिंदी अनुवाद जे. एल. रेड्डी ने किया है। ये कहानी है लबाडा जनजाति के लोगो की। जो जगलो में रहते है, खेती करते है। यदि वे केवल धान बेचकर गुजर–बसर करना चाहें तो उन्हे दो वक्त का भोजन भी न मिले। मजबूरी में महुए की शराब भी बेचते है। वैसे आदिवासियो को महुए की शराब बेहद पसंद है लेकिन सरकार ने उसे बनाने पर पाबंदी लगा रखी है। वे आबकारी विभाग से छुपाकार थोडी बहुत शराब खुद के लिए और कभी–कभी बेचने के लिए बनाते रहते है। आबकारी विभाग के लोग जब तब उन पर छापे डालकर अवैध बनायी गई शराब को जप्त करती रहती है। क्योंकि उन्हे कुछ केस दिखाना आवश्यक है।

मुडायि गाव में सर्दी के दिनों मे जब आदिवासी शराब बनाते है। आबकारी विभाग का छापा पडता है। कच्चे मिट्टी के घडो में इकट्ठी की गई शराब मटकों के फूटने से मिट्टी में मिल जाती है। आदिवासी जगलों मे छुप जाते है। कुछ शराब के मटके आदिवासी औरते अधिकारियों की मिन्नते करके छुपा लेती है। लेकिन किसी को तो पकड़ना जरूरी है इसीलिए एक परिवार को पकड कर पुलिस स्टेशन लाया जाता है। बाप–बेटे को जेल में बद कर इंस्पेक्टर सास–बहूँ की ओर रूख करता है। वह बहूँ को ऐसी ललचायी नजरों से देखता है जैसे 'बदर शहद के छत्ते को देखता है।' इस्पेक्टर बहू को निहार कर कहता है शराब पीकर और चिडियों और खरगाशों को खाकर देखो, कैसी मुटाई हुई है।' सास इंस्पेक्टर की घिनोनी नजर को पहचान कर उसे तीखी नजरो से देखती है तो वह उसे भी सेल में डलवा देता है। जब दरोगा लछमी के सीने को छुने की नाजायज कोशिश

करता है तो वह अपनी नफरत निगाहो से व्यक्त करती है और वह इस्पेक्टर कठोर रूख अपना लेता है – इस्पक्टर का असल मे मुकदमा शराब पर नही हिकारत भरी नजर पर था।' उस क्षण बहू का उस इस्पेक्टर कैप नाग के फन के समान लगता है जो उसे डस लेगा।

इस्पेक्टर बहू लछमी से जिस घिनोने अदाज में बातचीत कर रहा होता है उससे साफ जाहिर होता है उसका इरादा क्या है। आदिवासी और दलित स्त्री को वे घर की मुर्गी समझते है। उनका उपभोग करना उन्हें अपना अधिकार लगता है। जिस तरह से हम बच्चों की गलती पर हल्की चपत लगा देते है उसी तरह आदिवासी आरोपी हो न हो उन्हे यदि पकडा जाता है तो उनकी गृहस्वामिनी का उपभोग कर लेना हल्की चपत के समान ही शहरियों, सभ्यजन कहलाने वालो को लगता है। थाने में नीम के पेड तले खडे पडोसी आदिवासी गाँव का सरपच रमावत नायक यह देख कर सहायता के लिए आगे बढता है। केवल अपने पीने के लिए ही उन्होने थोडी महुआ की शराब चुआयी होगी ऐसा कहकर उन्हें छोड देने का आग्रह करता है। दरअसल निजाम के जमाने में भी जनजाति के लोगों को शराब चुआने की इजाजत थी। पाच सेर शराब अपने पास ये लोग रख सकते थे। उसके बाद के वक्त में भी जंगल मे रहनेवाले इन लोगों की मेहनत और थकान को नजर में रखकर यह कायदा बना रहा कि ऐसी कोई कार्रवाई नही की जानी चाहिये, जिससे उसके रहन–सहन में कोई अडचन पडती हो। लेकिन पुलिस इंस्पेक्टर कहता है यह केस आबकारी विभाग का है और उन्हीं के कहने से वह इन आदिवासियों को छोड सकता है।

वास्तव में महुए के फूल बडी तादात मे लगते है। पहला अधिकार उन पर पंक्षियो मधुमक्खियों का होता है। वृक्ष से निचे गिरे फूलो को बंदर, भालू, जंगली सुअर ही खाते है। इन सब पशुओं के हमले से बचकर गिरिजन फूल चूनते है और शराब बनाते है। अब तक के छत्ते वे शहर जाकर बेचते थे अब यदि महुए के फूल उन्हे डिस्टिलरी में बेचनी पडे तो उन आदिवासियों का क्या होगा ? शहरी लोगों को अनेक प्रकार के विदशी–देशी शराब के ब्रेंड उपलब्ध है, गाव वालों को केवल महुए की, घर पर निकाली शराब ही मिल पाती है उस पर पाबदी ? वैसे शराब पर बंदी तो शहरों में भी है। रमावत नायक सवाल भी करता है कि शहर में 'दरिया की तरह बहती देशी शराब को रोक पा रहे है क्या आप लोंग ? उसे चुआने वालों को पकड पा रहे है कानून के हाथ तो मजबूर, गरीब आदिवासियों को ही पकडते है। जिस तरह नेताओं के कहने से देशी शराब बनाने वाले छुट जाते है वैसे ही उन्हें भी छुडवाने की तैयारी रमावत नायक करता है। वह आबकारी अधिकारी से बात करने जाता है और जाते जाते बडी महत्वपूर्ण बात कह जाता है – 'हम लोग सूखी लकडी और पके फल चुननेवाले लोग ही है। न ही बडी–बडी मूछों वाले लोगों की तरह चदन की लकडी और बडे–बडे अफसरों की तरह सागवान की

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

८३

लकडी को बेचकर खानेवाले है, या फिर बगलो और बारों मे फर्नीचर के लिए चोरी से माल इधर से उधर करने वाले लोग भी हम नही है। यही चूल्हे के लिए सूखी टहनियाँ बटोरनेवाले लोग है हम। कानून को हम गरीबों की जान की तरफ मत घुमाइए। बड़े चोरो पर रोक लगाइऐ।'

रमावत नायक जनजाति कल्याण विभाग के मंत्री से अपनी पहचान के कारण उस परिवार को शोषण से मुक्त करा लेता है लेकिन इंस्पेक्टर को लछमी में मदमाते महुए का फूल याद आता रहता है और उसे छोडने का मलाल भी रहता है।

आदिवासीयों की गरीबी और भुखमरी उनकी ऐसी हालत कर देती है कि वे पाप–पुण्य, योग्य -अयोग्य समझने की विवेक बुद्धि खो बैठता है। कई बार तो वह ऐसा भावशून्य हो जाता है कि जानते बूझते भी वह अपनो से ही दगा कर बैठता है। सरकार आदिवासियों की उन्नति या विकास के लिए जो कदम उठाती है, उसके लिए जो योजनाएँ बनाती है उस निर्णय प्रकिया में उसका स्थान ही नही होता।

गांव में डिस्टिलरी फैक्टरी का निर्माण किया गया। जब तक निर्माण कार्य चलता रहा आदिवासियों को मजदूरी मिलती रही लेकिन फैक्टरी बन जाने पर उन्हें मजदूरी मिलनी बंद हो जाती है। महुए के फूलों की शराब बना कर जो वे थोडा बहुत कमा लेते थे वह कमाई भी बंद हो जाती है। क्योंकि पेड़ से गिरे फूल चुनकर ये आदिवासी ही फैक्टरी पहुँचाते है। अब वनवासियों के पल्ले तो मिट्टी की गंध ही पडेगी। आदिवासियो से औने पौने दाम मे महुए के फूल खरीद कर वाइन बना कर फैक्टरी वाले शहरों में उसे बेचकर मालामाल हो रहे है। गरीब आदिवासी अपनी परंपरागत पद्धति से बनाई महुए के फूलों की शराब से भी बंचित है और फूल बेच कर उदर निर्वाह में भी असमर्थ है।

लच्छी नायक बेटे के इंतजार में तीन–तीन बेटियों का पिता बन जाता है। वाइन फैक्टरी को वजह से आमदनी कम हो गई और बेटियों को पालना मुश्किल होता गया। बेटियों के ब्याह की भी चिंता उसे सता रही है। एक सुबह दुर्देवी घटना घटित होती है। भालू उसकी एक साल की बेटी को उठा ले जाता है। उसकी पत्नी का रो–रो कर बुरा हाल हो जाता है। कुछ समय बाद ही बडी बेटी का ब्याह हो जाता है। उसे ससुराल छोडने जाते समय जंगल में भालू दिखायी देता है। जिसे देख उसकी बेटी चीख उठती है कि यह वही भालू है जिसने उसकी छोटी बहन को उठा लिय था। लच्छी नायक के दुःख का पारावार नही है। उसे याद आता है कि उसी ने गरीबी के चलते अपनी बडी बेटी के ब्याह के पहले अपनी सबसे छोटी एक साल की बेटी को बेच दिया था। वह अपने इस दुःख को परिजनों को भी नही बता सकता।

कुल मिलाकर महुए के फूल कहानी आदिवासियों की करूण व्यथा को बखूबी व्यक्त करती है। आदिवासी वनवासी कहलाते है क्योंकि वे वन का ही एक

भाग होते है। प्रकृति के सानिध्य में वे प्रकृति के साथ घुल मिलकर रहते है। वनसपदा का दोहन यदि कोई करता है तो वह है नागरी समाज और शासन। आदिवासी वन संपदा का प्रयोग आवश्यकतानुरूप करते है लेकिन वे प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचाते है। लेकिन वन विभाग और प्रशासन ने अनेक प्रकार की पाबंदियाँ लगा कर आदिवासियो की प्राकृतिक जीवन शैली ही बदल डाली। उन्हें गरीबी, भुखमरी की खाई मे ढकेल दिया। यौन शोषण और श्रम के अवमूल्यन के साथ ही उन्ह इतना शोषित किया जाता कि वे विवेकहीन तक हो जाते है। जिन आदिवासियो को हम भारतभूमि के मूल निवासी मानते है उन्हीं को इस भूमि पर उनके अधिकार से वंचित किया जाता है। फिर भी समाधान इस बात मे है कि कम से कम विमर्श के माध्यम से उनकी समस्याओं की और देखने का प्रयत्न तो हो रहा है देर से ही सही दुरुस्त रास्ते पर चलने का प्रयास तो हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. समकालीन भारतीय साहित्य नव. दिस. 2017
2. आदिवासी साहित्य : विविध आयाम : सं. डॉ रमेश कुरे
3. आदिवासी कौन –सं– रमणिका गुप्ता– राधाकृष्ण प्रकाशन : दिल्ली
4. मूलनिवासी बहुजन सिद्धान्त : सकल्पना, स्वरूप एवं व्यवहार वामन मेश्रवम, मूलनिवासी पब्लिकेशन
5. अम्बेडकरवादी सौन्दर्यशास्त्र और दलित, आदिवासी जनजातीय विमर्श – डॉ विनय कुमार पाठक

डॉ. मीना जाधव
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर,
जि. उस्मानाबाद
महाराष्ट्र

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad